आक्रामक मनोविदलता (सीज़ोफ्रेनिया) के एक मरीज से मेरा सामना

जैसे ही हमारा एम.एस.सी. नर्सिंग द्वितीय वर्ष का सत्र शुरू हुआ हम पायलट स्टडी के लिए तत्पर हो गए। इस संदर्भ में मैंने इंदौर के उपनगरीय समुदाय के एक परिवाार से मुलाकात शुरू की।

इस परिवाार में एक सदस्य (रामेश्वर) लंबे समय से मनोविदलता (सीज़ोफ्रेनिया) का शिकार था जिसका उपचार अनियमित था। दिसंबर की एक सुबह जब कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, उस परिवाार से मिलने का मेरा तीसरा अवसर था। जैसे ही मैं उस घर की ओर बढ़ रही थी, मैंने रामेश्वर की बूढ़ी मां को घर के बाहर बैठे देखा। वह पड़ौसियों से घिरी थी औस सभी हताश नजर आ रहे थे। सिसकती रामेश्वर की मां के चेहरे पर जख्म के निशान थे और आंखों में आंसू। करीब बहुंचने पर मैंने उसे अपनी पानी की बोतल देनी चाही किंतु वह अपना दायां हाथ बढ़ाने में असमर्थ थी। उसके कालर बोन पर सूजन थी, शायद फ्रैक्चर के कारण। उसकी एक सूजी हुई उंगली नीली पड़ गई थी, जिसमें उसकी अंगूठी धंस चुकी थी। सांत्वना देने और धीरज बंधाने के बाद वह कुछ बोलने की स्थिति में आई। उसके शारीरिक जख्म पिछली रात की दास्तान बयां कर रहे थे। गई रात रामेश्वर ने अपनी बूढ़ी मां को घर से बाहर ढ़केल दिया था व खुद को घर के अंदर बंद कर दिया था। आप बीती बयान करते बूढ़ी मां मेरा हाथ थामे रुदन करते आशाभरी नजरों से मेरी ओर देख रही थी।

विज्ञान में स्नातक 32 वर्षीय अविवाहित रामेश्वर अपनी 65 वर्षीय सेवानिवृत्त विधवा मां के साथ रहता थ। उनका आपसी लगाव व अंतरंगता देखते बनती थी। दोनो मिल कर अपने पुश्तैनी पुराने घर में गुजर बसर करते थै। रामेश्वर की मनोविदलता का निदान 17 वर्ष की आयु में हो गया था लेकिन रामेश्वर के पिता का मनोरोग विशेषज्ञों पर विश्वास नहीं था एवं वे रामेश्वर के इलाज के लिए नीम–हकीमों व झाड़फूंक वालों के पास जाते थे।

यह पता चला कि रामेश्वर के पिता स्वयं मनोविदलता के रोगी थे और नौकरी बदलते रहते थे व अक्सर काम से गैरहाजिर पाए जाते थे। वे बेटे को उसके सहपाठियों तथा हमउम्र बच्चों से अलगथलग रखते और उनसे मेलजोल बढ़ने न देते थे। रामेश्वर की मां विभिन्न स्थानों पर तबादले के कारण बेटे को बचपन में साथ कम ही रख पाईं और रामेश्वर मातृत्व के स्नेह से कमोबेश वंचित रहा था।

रामेश्वर के पिता एक दिन संदिग्घ अवस्था में घर पर मृत पाए गए थे, तब घर में कोई अन्य नहीं था। रामेश्वर की बहन ने भी 18 वर्ष की उम्र में विषप्राशन कर आत्महत्या की थी। इन दो घटनाओं से रामेश्वर को आघात पहुंचा था और उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ती चली गयी थी।

फिलहाल रामेश्वर कोई इलाज नहीं ले रहा था तथा पिछले एक सप्ताह से दैनिक कार्य भी ठीक से नहीं कर पा रहा था, अमूनन स्वयं से बुदबुदाने लगा था।। रामेश्वर की मां को मैं पास के सुनार की दुकान पर ले गई, बड़ी मुश्किल से उसकी उंगली पर फंसी अंगूठी कटवाने के लिए उसे राजी करवाया। कॉलर हड्डी में राहत के लिए गलापट्टी से उसे सहारा दिया व दर्दनिवारक दवा दी।

समुदाय के डाक्टरों की रूखी प्रतिक्रियाएं

पहले ही रामेश्वर की मां मानसिक अस्पताल के बाबत अनेक गलतफहमियों के कारण बेटे को वहां ले जाने के पक्ष में नहीं थी, वह स्थानीय डाक्टर को दिखाना चाहती थीं। उसे जैसे तैसे तैयार किया गया। फिर, समुदाय के डाक्टरों का रुख अनुकूल नहीं था। उनसे संपर्क किया तो उन्होंने दो टूक कहा कि यह केस उनकी प्रैक्टिस के दायरे में नहीं आता और वे जोखिम नहीं लेंगे यह भी कि उसे अस्पताल ही भेजना चाहिए।

अस्पताल की एंबुलेंस को फोन किया तो उन्होंने भी ऐसे रोगी को लाने में आनाकानी की। मुझे नजदीक के मनोचिकित्सक की याद आई जिसे हम गए साल मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह के दौरान इसी इलाके में हमारे अस्पताल द्वारा चलाए एक शिविर में मिले थे। वे शहर से बाहर थे, तो भी उन्होंने रामेश्वर को काबू में रखने के लिए कुछ दवाएं व इंजेक्शन लिखे जिन्हें लाने मैं 4–5 कि.मी. दूर गई। केमिस्ट लिखी हुई दवाएं नहीं दे रहा था, मनोचिकित्सक की फोन पर बात करवाने पर ही वह राजी हुआ।

मेंरे लौटने पर रामेश्वर ने स्वयं को अभी तक कमरे में बंद कर रखा था। लोगों की भीड़ में कोई फुसफुसाया, ''पहले पिताजी, फिर बहन इस घर से मृत अवस्था में बाहर लाए गए। क्या आज इतिहास की पुनरावृत्ति होगी?'' यह सुन कर मैं तनिक

नर्वस हुई किंतु फिर संभल गई। मुझे इस चुनौती का सामना करना था। करीब दिन के 3 बजे रामेश्वर ने दरवाजा खोला तो वह पूर्णतया अस्तव्यस्त, डरावना सा लग रहा था। उसे देखते ही भीड़ के आधे लोग भाग गए। जैसे तैसे तीन–चार युवकों ने उसे घर दबोचा और मैं डाक्टरी निर्देशानुसार इंजेक्शन देने में कामयाब रही। रामेश्वर को हमने खटिया पर पड़े रहने दिया। करीब पौन घंटे बाद इंजेक्शन के असर से वह शांत नजर आया। फिर उसे गोली खिलाई गई। मनोचिकित्सक को मैं समय–समय पर स्थिति से अवगत करा रही थी।

मानसिक अस्पताल की एंबुलेंस के फोन पर मैंने पहले तो उन्हें फोन नहीं काटने का अनुरोध किया, फिर वरिष्ठ अधिकारियों से बात करने का आग्रह किया। मैंने उन्हें समझाया कि रामेश्वर की स्थिति आपात्कालीन ही मानी जानी चाहिए। वे सहमत हो गए और कुछ समय बाद एक सुसज्जित एंबुलेंस हमारे सामने खड़ी थी। मेरी सारी थकान हवा हो गई और खुशी की लहर मेरे मन में दौड़ गई। तभी स्थानीय पुलिस को भी सहयोग के लिए बुला लिया गया। रामेश्वर की मां को आशंका थी कि पुलिस उसे मारेगी, उन्हें समझाया।

अस्पताल में दाखिला

अस्पताल के अधीक्षक का रवैया सहयोगात्मक था। रामेश्वर की मां के मनोभावों को देखते हुए उन्होंने उसे बेटे के साथ रहने की अनुमति दे दी।

रामेश्वर भरती हो चुका था। मेरा लक्ष्य पूरा हुआ। मैंने रामेश्वर की मां को आश्वस्त किया की मैं पुनः उनसे मिलने आऊंगी। उनकी आंखों में अब संदेह की बजाए कृतज्ञता के भाव थे।

दूसरे ही दिन उनसे मिलने पर मैंने विशेषज्ञ की सलाह से एक्स–रे के बाद कॉलर ब्रेस लगवा दिया। अब की बार पड़ोसियों का मुझ से व्यहार सौहार्दपूर्ण था, उन्होंने मुझे बैठा कर रामेश्वर का हालचाल पूछा और चाय पिलाई; ये वही पड़ोसी थे जो कल तक इस समुदाय में अकेले न आने की हिदायत दे रहे थे।

उधर रामेश्वर से मुलाकातों से पता चला कि उसकी हालत में सुधार हो रहा था, वह अपने रोजाने के कामकाज स्वयं कर पा रहा था। वहां के कर्मचारियों व प्रशिक्षणार्थियों से उसके सामाजिक संबंध अच्छे हो गए थे। कुछ दिन बाद उसने हमारे संस्थान द्वारा आयोजित मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह में बढ़चढ़ कर भाग लिया एवं क्ले मॉडलिंग व ड्राइंग में इनाम हासिल किए। खाली समय में वह अन्य रोगियों के साथ कैरम खेलता व अपनी मां के कामों में मदद करता। शुरुआत में इस परिवार की आर्थिक मदद में मेरी शिक्षिका व एक वरिष्ठ सहपाठिन शामिल थीं।

अस्पताल से छुट्टी

तीन माह बीत चुके हैं, अब रामेश्वर को अस्पताल से छुट्टी मिलने वाली है। अब उसे रोज की गोलियों के बदले एसा इंजेक्शन दिया जाएगा जिसका प्रभाव एक महीने तक रहेगा।

मानसिक अस्पताल के प्रति रामेश्वर की मां की धारणा बदल चुकी थी।

हमारे महाविद्यालय की प्राचार्या ने 108 ईएमआरआई के मुख्य अधिकारी को प्रशंसा पत्र लिख कर मानसिक अस्पताल का आभार माना और अनुरोध किया कि भविष्य में अपनी सेवा प्रदान सूची में मनोरोगियों को शामिल करें। इन सुझावों को अधिकारियों ने स्वीकार किया।

रामेश्वर के इस प्रकरण से मुझे जिंदगी की एक चच्चाई का एहसास हुआः

'ना ही वादे, ना कोई आश्वासन, करता यह जीवन हमें प्रदान।

यह दिखलाए संभावनाएं व लाए सुअवसर, गर लें हम उसकी चुनौतियां जान।''

श्रीमती भारती सुरेश बत्रा
पाठ्यनिर्देशिका, परिचर्या प्रशिक्षण महाविद्यालय
इंदिरा गांधी वैद्यकीय महाविद्यालय व रुग्णालय, नागपुर
(एमजीएम यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसिज़, नवी मुंबई में पीएच डी स्कालर)

■